जहरीली हवां की ससकी

शिवम यादव | बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान | तृतीय वर्ष | देशबंधु कॉलेज

ईमेल आईडी- shivamjhn1@gmail.com

मै हवा बिना चेहरे , बिना कोई रंग
हर दिशा में बहती हर किसी के संग
कभी कभी मदमस्त , तो कभी प्रलय
से भरी पर अब अब हो गई हूँ,
एक शोक की कहानी

पहले थी मैं स्वच्छ, पवित्रता से भरी
प्रतिबश बसती थी , ग़मक ककी परी
हो गई हूं धुआँ-धुआँ जैसे विषैली ठठकी
कभी लोगों में राहत थी
अब घुटन की ससकी

फैक्टरियों में कैद हूँ।
नगरों में छूटी, रास्ते गरम है।
मैल से लपटी
लोगों का स्वास्थ्य था मेरी पहचान
अब बीमारी और दवाइयां
मेरी पहचान

ओ मनष्यु ! मैं अभी भी हूँ वहीं ,
पर जो किया है उसका फल मिलेगा कभी
संभल जाओ वैसे वो दिन जल्द हो आएगा
जब मैं मैं ना रहूंगी, प्रतवेश में सन्यप छाएगा।